जयपुर में अखिल भारतीय राम जन मण्डल द्वारा आयोजित विशाल धर्म सम्मेलन एवं सम्मान समारोह माननीय अध्यक्ष का संबोधन

———

अखिल भारतीय रामजन मंडल के तत्वावधान में आयोजित संत समाज के इस सम्मेलन में मैं सभी संतों का अभिनंदन करता हूं। अखिल भारतीय रामजन मंडल के पीठाचार्य, श्री भगवान दास जी, स्वामी कृष्णानंद महाराज जी, अखिल भारतीय रामजन मंडल के संयोजक रघुवर दास जी, अखिल भारतीय रैगर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष वी. एम. नवल साहब, इस क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक माननीय अशोक डोगरा जी और इस कार्यक्रम के संयोजक श्री बाबूलाल जी, धातुनिया जी, इस संत सम्मेलन में पधारे सभी श्रद्धालु भाइयों, बहनों और माताओं।

आज हम सब श्री श्री आचार्य 108 जीवाराम जी महाराज को याद कर रहे हैं, जो हमारे बीच में नहीं रहे, ब्रह्मलीन हो गए, लेकिन उन्होंने इस समाज के अंदर आध्यात्मिक जागृति लाई। उन्होंने समाज को भक्ति का मार्ग दिखाया और बताया कि कैसे हम आध्यात्मिक ज्ञान से अपने जीवन को बदल सकते हैं। हमारे धर्म में सहिष्णुता है, प्रेम है, एक-दूसरे का सहयोग करने का हमारा संस्कार और संस्कृति है।

भारत ही नहीं पूरे विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से हम परिवार मानते हैं। इसी भारतीय संस्कृति, संस्कारों को हमारे धर्माचार्यों ने गांव-गांव, ढाणी-ढाणी तक पहुंचाने का काम किया।

हम स्वर्गीय ब्रह्मलीन रूपदास जी महाराज को भी याद करते हैं, जिन्होंने इस समाज में आध्यात्मिक, धार्मिक जागृति पैदा की। जीवाराम जी के बारे में बाबूलाल जी ने बहुत विस्तार में बताया। उन्होंने अपने हाथ से 27 से ज्यादा किताबें लिखीं। ये उस समय लिखीं, जब समाज के अंदर न सामाजिक जागरुकता थी, न आध्यात्मिक जागृति थी। उस समय उन्होंने गांव-गांव में जाकर अपने उपदेश से, अपने ज्ञान से लोगों के जीवन को परिवर्तन करने का काम किया।

मेरा रैगर समाज से बहुत निकटता और घनिष्ठ संबंध है। मैं जानता हूं कि इस समाज ने बहुत कष्ट और दु:ख झेले हैं। इस समाज में अभी भी एक बहुत बड़े परिवर्तन की आवश्यकता है, सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता है, आर्थिक परिवर्तन की आवश्यकता है। सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाने के लिए हमें समाज में शिक्षा लानी पड़ेगी।

जब-जब जिस देश के अंदर, जिस समाज के अंदर शिक्षा रूपी उजाला पहुंचा, उस समाज में जागृति आई, उस देश में नये परिवर्तन आए।

श्री बी.एल.रावत जैसे प्रशासनिक अधिकारी हैं। उस समय अपने कठिन परिश्रम से उन्होंने सेवाओं के अंदर योगदान दिया। जब समाज में एक बच्चा पढ़ लेता है तो वह समाज का नेतृत्व करता है, परिवार का नेतृत्व करता है और समाज को आगे ले जाने का भी काम करता है।

आपने देखा होगा कि जिस समाज के अंदर शिक्षा, आध्यात्मिक, संस्कृति का ज्ञान पहुंचता गया, उस समाज के अंदर एक सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन आते गए। लेकिन अब 75 वर्षों के बाद भी हमारे संतों ने हजारों वर्षों तक भारतीय संस्कृति और वैदिक ज्ञान के माध्यम से हमें सुसंस्कृत करने का काम किया है।

मुझे याद है, ये संत गांव-गांव में रहते थे, भजन करते हैं, कीर्तन करते हैं, आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं। उस समाज के अंदर आध्यात्मिक ज्ञान से कैसे व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन हो सकता है, उस समाज में उपदेश देते हैं। इन संत समाज का इस भारत के अंदर इस संस्कृति को बचाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

दुनिया में भारतीय संस्कृति को खत्म करने के लिए कई वर्षों तक कई अलग-अलग संस्कृति और विचारधाराओं के लोगों ने राज किया, लेकिन भारत की संस्कृति को कोई खत्म नहीं कर सका, क्योंकि हमारे संतों ने विकट परिस्थिति में भी भारत की आध्यात्मिक ज्ञान और संस्कृति को जीवंत रखा, यह संत समाज का योगदान है।

आज मैं कह सकता हूं कि जिस समर्पित सेवा के माध्यम से इस समाज में परिवर्तन हुआ है लेकिन हमें और परिवर्तन करने की आवश्यकता है। हमें इसके लिए साझा प्रयास करना होगा, मिलकर प्रयास करने होंगे। जो बच्चा पढ़ लिखकर आगे चला गया, जो परिवार आगे चला गया, जिनके जीवन में सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन हुआ है, उसको समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन को बदलने के लिए एक कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है।

मैं रैगर समाज के राष्ट्रीय अधिवेशन में भी गया था। उस समय मैंने कहा था कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए एक पीढ़ी को बलिदान देने की आवश्यकता है। एक पीढ़ी को त्याग करने की आवश्यकता है। एक पीढ़ी को कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है।

एक पीढ़ी ने त्याग और बलिदान कर दिया, तो आने वाली पीढ़ी रैगर समाज की इस देश और प्रदेश में नेतृत्व करेगी। मैं रैगर समाज के लोगों को जानता हूं, वे कठिन परिश्रमी होते हैं। परिश्रम के साथ अध्यात्म के कारण, धर्म के कारण उनके हर काम सत्य होते हैं। कठिन परिश्रमी हो, सत्य पर चलने वाला

हो, सुसंस्कृत समाज हो, उस समाज के अंदर निश्चित रूप से परिवर्तन आ सकता है। यह परिवर्तन हमें लाना ही है।

जब बाबू लाल जी मेरे पास आए थे तो मैंने कहा कि मैं निश्चित ही आपके समाज में आउंगा। मेरा वचन है आप मिलेंगे, हम मिलेंगे और मिलकर इस समाज के अंदर सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा के माध्यम से एक नये परिवर्तन का इतिहास लिखेंगे। इसीलिए हमें गांव-गांव जाना चाहिए, शहर-शहर जाना चाहिए, जिस तरह से हमारे आध्यात्मिक गुरू जाते हैं, वैसे ही समाज के लोगों को उन गांवों के अंदर क्या कठिनाइयां हैं, क्या चुनौतियां हैं, उन कठिनाइयों और चुनौतियों का कैसे समाधान हो सकता है।

मैं आपके साथ हमेशा खड़ा हूं। के.एल. नवल साहब ने एक बात रखी है। दिल्ली से आने के बाद ये मुझसे मिले। मैं आज इनसे कह रहा हूं कि आपकी हर समस्या के समाधान का अंतिम पड़ाव मैं रहूंगा।

आप समस्या लेकर आएं, मैं उसके समाधान का प्रयास करूंगा। अभी बाबूलाल जी ने एक बात रखी। सरकार और राज्य सरकार की तरफ से उन्होंने प्रस्ताव भिजवाए।

केंद्र सरकार को मैं आग्रहपूर्वक कहूंगा कि वह यहां पर श्री जीवाराम आचार्य महाराज का स्थान बनवाए, जिसे देश के लोग आकर देखें। अगर सरकार नहीं करती है, तो मैं, आप और समाज के लोग मिलकर करेंगे। एक-एक रुपया जोड़कर तैयार करेंगे। उस स्थान पर आकर महाराज जी का जीवन, उनका संघर्ष, उनका आध्यात्मिक ज्ञान और उन्होंने जो 27 किताबें लिखी हैं, उन किताबों के माध्यम से समाज में कैसे परिवर्तन हो सकता है, आने वाली पीढ़ी आकर उस स्थान को देखेगी और समझेगी कि किस तरीके से हमारे संतों ने इस समाज में परिवर्तन करने का काम किया है। आपके बीच में मुझे आने का मौका मिला।

मेरी यह इच्छा थी कि चूंकि अलग-अलग राज्यों से संत समाज के लोग आ रहे हैं, तो उनके दर्शन का सुअवसर मैं कैसे खो सकता था। आज उनके दर्शन करने का मुझे सौभाग्य मिला है। हम सब मिलकर निश्चित रूप से इस समाज को आगे बढ़ाएंगे और समाज में नए परिवर्तन लाएंगे। इस परिवर्तन के लिए हम साझा प्रयास करेंगे। मैं पुन: इस सम्मेलन में पधारे सभी संतों को प्रणाम करता हूं।